ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

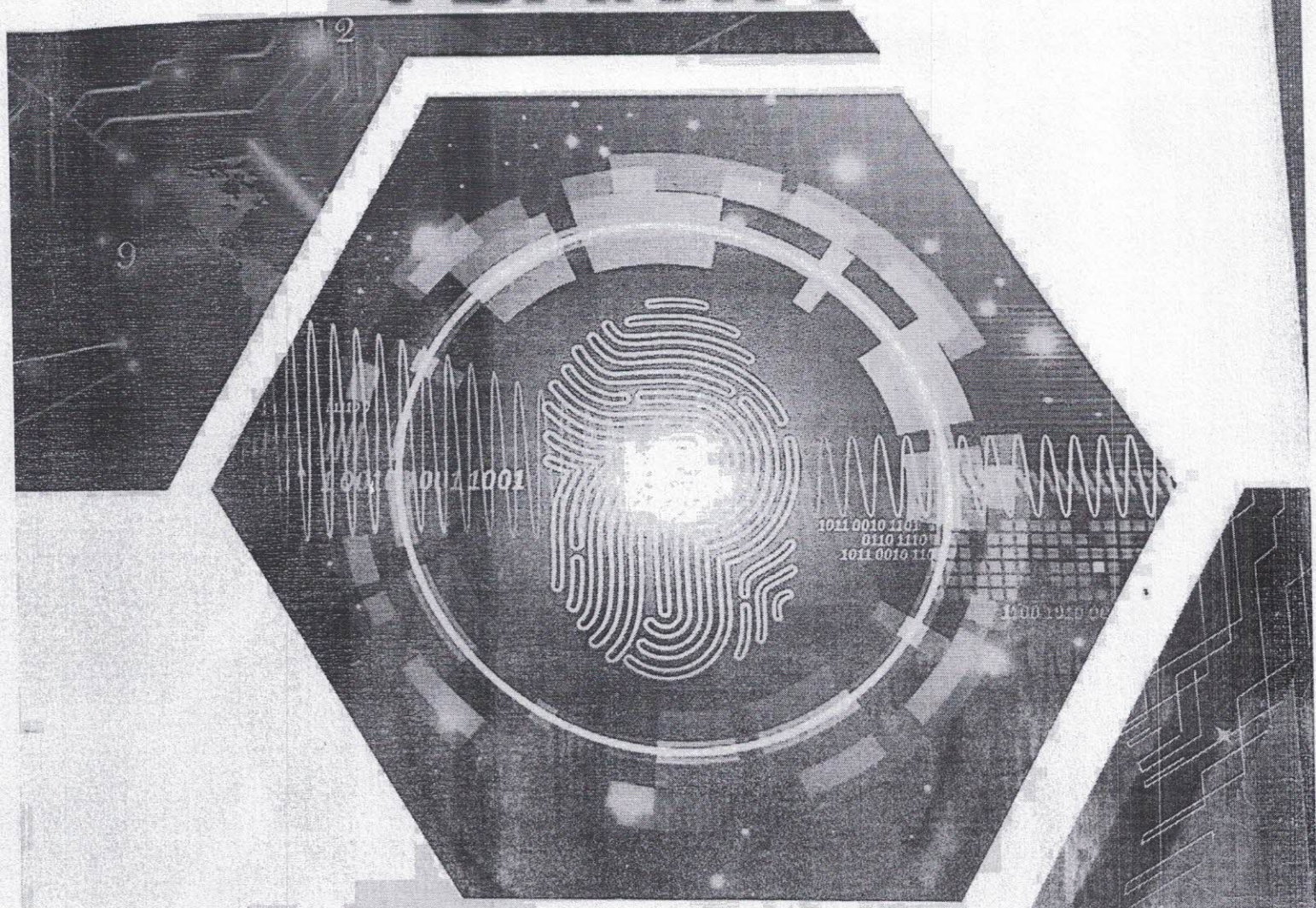

Volume-VIII, Issue-II
April - June - 2019
English / Marathi / Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner

ADAT VIKAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	गंगा रक्षति रक्षतिः डॉ. वागीश राज शुक्ल	१-६
२	गुरू नानक वाणी - विचारधारा के रत्न और आधुनिक मानव अशोक कुमार	७-११
३	चर्मकार समाज के कारीगरों का आर्थिक व सामाजिक विश्लेषण (विशेष संदर्भ यवतमाल जिला) चंदा आनंद बोरकर डॉ. करमसिंग राजपूत	१२-१९
४	नरेंद्र कोहली के व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल प्रा. खंदकुरे व्यंकट अमृतराव	२०-२५

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

४. नरेंद्र कोहली के व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य

प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर.
प्रा. खंदकुरे व्यंकट अमृतराव
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर.

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय समाज की विकराल राजनीतिक परिस्थितियों पर व्यंग्यकार को व्यंग्य लिखने की प्रेरणा मिलती है। राजनीतिक क्षेत्र में नैतिक मूल्यों का किस तरह से पतन स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति में होते जा रहा है। आझादी के पूर्व के दिनों में हमारी राजनीति पवित्र थी, लेकिन आज कलंकित हो गई है। तब नेता अपनी जान की बाजी लगाकर मूल्यों के लिए जीते थे। राजनीति को देशसेवा मानकर कार्य करते थे। उनको सत्ता का लोभ नही था। देश को प्रगति के रास्ते आगे बढाना उनका मकसद रहता था।

आज आझादी के बाद के नेता पेसा कमाने के लिए राजनीति में आते है। बडी ईमानदारी से अपने इस सिध्दात का पालन आज यह राजनेता करते है। आजकल की राजनीतिक पार्टीयों में सिद्धांत और मूल्यों के लिए जगह नही है। क्योंकी हरदिन आज इन्ही पार्टियों दागी राजनेता आ रहे है और उन्हे ही इन पार्टियों में महत्व दिया जाता है।

स्वार्थी राजनेता

स्वार्थपूर्ण राजनीति से आज देश की हालात बुरी हो रही है। अपने सपने को साकार करने के लिए देश की जनता ने अपने को ऐकता के सूत्र में बाँधकर अंग्रेजो को सामना किया था। स्वतंत्रता-आंदोलन के सच्चे देशभक्त तथा देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करनेवाले आज गुमनामी के अंधकार में कुढ रहे है। नरेन्द्र कोहली ने देश की और सच्चे-देशभक्तो की इस हालात पर तीखा व्यंग्य 'दूरदृष्टि' में किया है।

''अपना जनतंत्र भी अब चालीस पार कर चुका है। उसे भी यह तो दिखाई दे रहा है कि फिलिस्तान और यागोस्लाविया में क्या होना चाहिए, किन्तु पंजाब, काश्मीर और आसाम में क्या होनी चाहिए। यह देखने की तो अब उम्र ही नही रही। राजनेता उसके पास संसार की प्रत्येक समस्या का समाधान है, किन्तु अपने देश की न गरीबी संभलती है, न जनसंख्या वह दक्षिण आफ्रिका में रंगभेद मिटाना चाहता है, किन्तु अपने देश में तरह-तरह के कमीशन और आयोग बनाकर नए-नए भेदभाव करता है। हजारों वर्षो के इतिहास में कब, कहाँ अत्याचार हुआ, यह उसे आज भी हाथ के कंगन के समान दिखाई दे रहा है। किन्तु उसकी नीतियों से कौन कहाँ झुलस रहा है- यह उसे दिखाई नहीं देता।''

Scanned by CamScanner

मूल्यहीन राजनीति

जहाँ कुर्सी मिले वहाँ जाना अब नेताओं का सिध्दांत बन गया है। जिस पार्टी में अधिकार का फल मिले उस दम में शामील होना राजनेताओं की आदत बन गई है। देशभक्ति की भावना इनमें नाम मात्र के लिए भी नहीं है। सत्ता के मोह मे झूठे आश्वासन एवं हवाई नारों को अपनाकर चुने जाने के बाद जनता के प्रति उदासिन बन जाते है, ऐसी नेताओं की प्रवृत्ति बन गई है। जब देश रक्षा का सवाल उठता है। तब राजनेता पीछे रह जाते है। इसे देखकर नरेन्द्र कोहली ने अपने 'जनता हमसे प्यार करें' नामक व्यंग्य रचना में इन नेताओं के उपर व्यंग्य करते है।-

''देश माने क्या? मैने पूछा, आपको यहाँ की संस्कृति से प्यार है?

नही! इस बूर्जुआ संस्कृति से हमें क्यों प्यार होगा।

उनके स्वर में घृणा भी थी और अंहकार भी, हमारी तो अपनी संस्कृति है।

देश से अलग संस्कृति। अच्छा खैर होगी तो आपको इस देश की मिट्टी से प्यार है? वैसे तो हम राष्ट्रवाद के विरोधी है, पर फिर भी जहाँ-जहाँ हमारी पार्टी का शासन होता है, वहाँ की मिट्टी से हमें प्यार हो ही जाता है।''

नेताओं में अज्ञान

राजनीतिक नेताओं को खुश करने के लिए उनकी चमचागीरी करने हेतू समाज के सभी वर्ग के लागे उत्साहित रहते है। इसमें कॉलेज के अध्यापक भी पीछे नहीं रहे है। राजनेताओं को किसी न किसी कार्यक्रम के बहाने कॉलेज में बुलाकर अपने निजी स्वार्थ को पूरा करने के लिए दुरुपयोग करते है। ये राजनेता सभा-समारोहों में गलत भाषण करके अपने अज्ञान का प्रदर्शन कराता है। इसका उल्लेख नरेन्द्र कोहली ने 'त्रासदी एक कामना' की नामक व्यंग्य रचना में किया है।

''तुलसी जयंती पर एम्पी आए। उन्हे फूल मालाँए थोक के भाव पहनाई गई। देश में प्रचलित, भवान की प्रसिध्द आरतियाँ तनिक संशोधन के साथ एम्पी के लिए गाई गई और उनसे तुलसीदास के विषय में दो शब्द कहने का निवेदन किया गया। एम्पी उठे बोले वे जो टेलीफोन की ऐप्लीकेशन लेकर आए थे। उन्होने मुझे बताया था कि आप लोग मेरा अभिनंदन करना चाहते है, क्योंकि आज मेरा हैप्पी बर्थडे है।

निरालाजी मेरे घनिष्ठ मित्र रहे है। मुझे किसी ने बताया था कि निरालाती ने तुलसीदास नामक एक पोथी लिखी है। जिसके हीरो तुलसीदास है, तो आप उनकी जयंती।''लडको ने फिर शोर मचा दिया। लडके तो लडके ही है, चाहे विज्ञानपरिषद के नाम पर एकत्र हुए हो या तुलसीजयंती के नाम पर शोर मचाने लगे।

पार्टिया के बीच संघर्ष

देश में राजनीतिक पार्टियाँ अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने के होड में लगी है। अगर स्वर्ग धरती पर उतर आए तो क्या होगा इसकी कल्पना नरेन्द्र कोहली ने अपने इस प्रसंग में चित्रित किया है। ये पार्टियाँ देश की प्रगती के लिए नहीं लडती

Scanned by CamScanner

बल्कि अपने निजी विकास के लिए सत्ता में आना चाहती है। 'साहित्यकार की घोषणाएँ' नामक व्यंग्य रचना में भ्रष्ट राजनीतिक पार्टियों पर व्यंग्य नरेन्द्र कोहलीजी ने किया है।

''स्वर्ग जब धरती पर उतर ही जाएगा, तो अवश्य ही काफी झगडा मचेगा। आखिर उसे धरती पर किसने उतारा? उस समय कोई यह नहीं मानेगा कि स्वर्ग मेरी घोषणा ने उतारा है। भूदानी अपने झोला लिए दौडेंगे कि डाकुओं के आत्मसमर्पण के समान ही स्वर्ग भी विनोबा ने ही उतारा है। काँग्रेजी अपनी टोपी सँभाले दौडेंगे कि स्वर्ग उनके लिए उतरा है और गाँधीजी ने उतारा है। नई काँग्रेस वाले गुलाब के फूल लिए दौडंगे भेज दिया, भेज दिया। नेहरुजी ने हमारे लिए भेज दिया।''

नेताओं का भ्रष्टाचार

राजनीति में नेता जब चुनाव जीतकर मंत्री बनते है। तब जनता की सेवा करने के अपने वायदों से मुकर आते है। अपने को ही भ्रष्ट मंत्री साबित करते है। पैसा हडपने के मामले में आगे-पीछे नहीं देखते है। पकडे जाने पर भी शर्मिदगी महसूस नहीं करते है।

राजनेताओं के गिरते नैतिक मूल्यों का चित्रण करते हुए नरेन्द्र कोहली ने अपनी 'इदम न मम' नामक रचना में संवादशैली में व्यंग्य किया है। ''मैने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। फिर से प्रश्न किया, यदि रुपया सुखराम का था तो पुलिस उसे पकड क्यों रही है? केवल इसलिए कि वह अपना पैसा अपने घर में रखता है?

नही! वह पैसा गलत तरीके से कमाया गया है। यह उसे नहीं कमाना चाहिए था।

नहिं कमाना चाहिए था का क्या अर्थ?

मैने कहा कोई कमा सके तो क्यों न कमाए

वह सब पैसा उत्काच में लिया गया है।

तो रिश्वत और दलाली कमाई नहीं होती?

नहीं वह कमाई नहीं है। उसने उत्तर दिया।''

वोट की राजनीति

आज के राजनेता चुनाव में जीतने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते है। सांप्रदायिक दंगे, जातिगत द्वेष, नोट देकर वोट खरीदने जेसे हथकण्डे अपनाते है। वोट पाने की इच्छा से बांग्लादेशवासीयो को भी अवेध तरीके से अपने देश में बसाने को इज्जाजत दे सकते है। ऐसे देश की कई समस्याएँ को जन्म यह राजनेता लोग करते है।

नरेन्द्र कोहली ने 'मतदाओं का आयात' नामक व्यंग्य रचना में आज के राजनेताओं पर लिखा है। ''आपको पता भी है कि आपके वोटों के चक्कर में देश की जनसंख्या कितनी बढ गई है? मैने उन्हे डाँटने का प्रयत्न किया।

जनसंख्या नही बढी है, हमारे वोट बढे है।

Scanned by CamScanner

किंतु वे विदेशी है। वे वोट नहीं दे सकते। मैने बोला हमने उनके राशनकार्ड भी बना दिए है और मतदाओं की सूची में उनके नाम भी लिखवा दिए है।

वे हंसे, रहे वे बंगला देशी, पर वोट तो हमें ही देंगे।''

आज के नेता अपना स्वार्थ साधने के लिए कोई भी खतरा मोल लेने को हिचकिचाते नही है। वोट पाने की खातिर आम जनता को आपस में झगडा करवाने के लिए भी तैयार हो जाते है। जिन लागों से वोट लेते है उन्हीं लोगों को अशिक्षा के अंधकार से बाहर आने नहीं देते है। सत्ता के लिए यह राजनेता जनता को देश और धर्म के नाम पर विभाजन तक करवाते है। आधुनिक भ्रष्ट, लाचार राजनीति पर नरेन्द्र कोहली ने 'तृष्णा' नामक व्यंग्यरचना में प्रहार किया है।

मुझे न उनकी शिक्षा चाहिए, न उनकी प्रसन्नता। मुझे तो उनके वोट चाहिए। वस्तुतः वह भी नहीं चाहिए। मुझे तो चुनाव जीत कर सत्ता प्राप्त करनी है, उसके लिए जो भी करना पडे।''

राजनेता के कथनी और करनी में अंतर

राजनीति के क्षेत्र में नेता बुराइयों का प्रतिरुप बन गए है। उनकी कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है। जाति के आधार पर धर्म निरपेक्षता के रंगबिरंगी गुब्बारे जैसी बाते करके आम जनता को भ्रम में डालते है। इसका वर्णन कोहली ने 'जनता हमसे प्यार करे' व्यंग्य में लिखते हे।

''आपकी पार्टी ने कभी यह क्यों नहीं सोचा कि उसे भी भगवान के किसी एक रुप पर अपना कब्जा जमा लेना चाहिए। अवैध कब्जा ही सही। यदि आपने ऐसा किया होता, तो आप भी मनमाना उपयोग कर रहे होते।

हमारी पार्टी ने तो बहुत पहले से सोच लिया था। वे मुस्कराए, हमने तो भगवान के किसी एक रुप की बात ही क्या, सारे देवी-देवताओं समेत समग्र भगवान पर कब्जा कर लिया था।''

भ्रष्ट नेता और अधिकारी

आज के नेता जिस प्रकार भ्रष्ट होते है उसके अनुसार उनके अधिकारी भी यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार भ्रष्ट हो गए है। प्रशासन के सभी स्तरों पर अधिकारीयों की भ्रष्टता व्याप्त है। एक मंत्री और उसके सचिव के बीच के वार्तालाप को 'विकल्प' नामक व्यंग्य रचना में नरेन्द्र कोहली ने भ्रष्ट राजनेता और अधिकारी के संबंध व्यक्त कीऐ है।

''मुझे रामलुभाया का सुनाया हुआ एक चुटकुला स्मरण हो आया। उसने बताया था कि उसके मंत्री ने बहुत रुष्ट होकर मंत्रालय के सचिव को डाँटा था। मुझे मालूम होता कि तुम मेरे सचिव होगे, तो मैं यह मंत्रालय ही स्वीकार नहीं करता। सचिव भी कुछ दुष्ट हो चुका था। बोला, आपके पास तो विकल्प था सर! मेरे पास तो वह नहीं था।''

Scanned by CamScanner

DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR

दल-बदल

नेता किसी एक पार्टी में तब तक रहता है जब तक उस पार्टी से उसका स्वार्थ का लाभ होता है। वहाँ उसके लिए स्वच्छंद हवा युक्त बाग-बगीचे के समान होती है। अगर उसे अमुक पार्टि से कुछ लाभ न मिले तो उसका दम घुटने लगता है। दल-बदलने के काम को तो कपडे बदलने के समान होते है। इस पर तीखा व्यंग्य नरेन्द्र कोहली 'घर' नामक रचना में किया है।

''यह क्या रामलुभाया ? मैंने पूछा।

क्या यह क्या? उसने मुझे ऐसे देखा, जैसे कुछ नया हुआ ही न हो।

तुम उसी पार्टी में लोट गए, जहाँ कल तुम्हारा दम घुट रहा था।''

आजकल जननेता दल-बदल इसलिए करते है ताकि वे देश की सेवा करते रहे। चुनाव में टिकट पाना, चुनाव जीतना और मंत्री बनना इनका मकसद रहा है। इसलिए कभी जितने के लिए दल बदलते है। इसके उपर कोहली कहते है।-

''आपकी पार्टी कोन सी है? मैने धुष्टतापूर्वक पूछा। आजकल प्रत्येक नेता से बात करने से पूर्व उसकी ताजा पार्टी का नाम पूछ लेता सुरक्षित विधी है।

अभी मैंने उसका चुनाव नहीं किया है।''

अब हमारे समाज में लोगों के मन में राजनीति से विश्वास कम होता जा रहा है। मतदान के समय अपने नेता को जिताने के लिए समर्थक कुछ भी करने को तेयार हो जाते है। वोट पाने के लिए लोगो को भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र के नाम पर बाँटते हुए समाज में अंशाति फैलाते है। गुंडागर्दी करना, खून करना, डाका डालना आदि राजनीति करने के लिए अनिवार्यता आज के युग में बन गई है। क्योंकि ऐसे रास्ते से ही आज के राजनेता राजनीति प्रवेश कर रहे है। इसका वर्णन नरेन्द्र कोहलीने 'जनतंत्र' नामक व्यंग्य रचना में किया है। ''हम तो विधायक उन्हीं को मानते है, जो हमारे दल के है। वह बोला, हमारे दल के बाहर के लोग बेईमानी से आए है।

क्यों? मैंने पूछा, ऐसा कहने का कारण?

हमने सारे बूथों के चुनाव अधिकारियों को समझा दिया था कि वोट कैसे छापता है।

जहाँ नहीं समझा पाए, वहाँ अपने लोगो को समझा दिया था कि बूथ कैसे लुटना है।

इसलिए हमारे दल के बाहर जो आदमी जीतकर आया है, वह बेइमानी से आया है। भोलाराम बोला, वह विधायक है ही नहीं। उसे न विधान सभा में बैठने का अधिकार है और न सरकार बनाने का। सरकार तो हमारे ही दल की बनेगी।''

नेताओ की बेकारी

आज के राजनीति में राजनेताओं के या मंत्रियो के रिश्तेदारों का तरह-तरह के अधिकारयुक्त पदवियों दी जाती है। संकटग्रस्ट राजनेताओं की बेकारी की समस्या इस प्रकार दूर की जा सकती है। ये विधायक सांसद-मंत्री लोक सरकार की विभिन्न

Scanned by CamScanner

DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

सुविधाओं को प्राप्त करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते है। इस हालात पर व्यंग्य का प्रहार करते हुए नरेन्द्र कोहली ने लिखा है।

''जैसे-जैसे नए प्रदेश बनते गए थे, नेताओं और उनके रिश्तेदारों को सत्यपाल बना दिया गया था। पर अब न नए देश बन रहे थे, न नए प्रदेश और नेताओं के रिश्तेदार बढ रहे थे। उनके बेकार हों तो वे किसी भी देश के लिए धूककेतु का काम करते है।''

संदर्भ सूची

१. नरेन्द्र कोहली : त्रासदियाँ , पृ. सं. ९-१०
२. नरेन्द्र कोहली : एक ओर लाल तिकोन , पृ. सं. ५१-५२
३. नरेन्द्र कोहली : देश के शुभचिंतक, समग्र व्यंग्य-एक पृ. सं. ६७
४. नरेन्द्र कोहली : त्राहि-त्राहि, समग्र व्यंग्य दो, पृ. सं. ३५८
५. नरेन्द्र कोहली : त्राहि-त्राहि, समग्र व्यंग्य दो, पृ. सं. ४५९
६. नरेन्द्र कोहली : रामलुभाया कहता है, समग्र व्यंग्य चार, पृ. सं.६७
७. नरेन्द्र कोहली : एक ओर लाल तिकोन , पृ. सं. ३७

Scanned by CamScanner

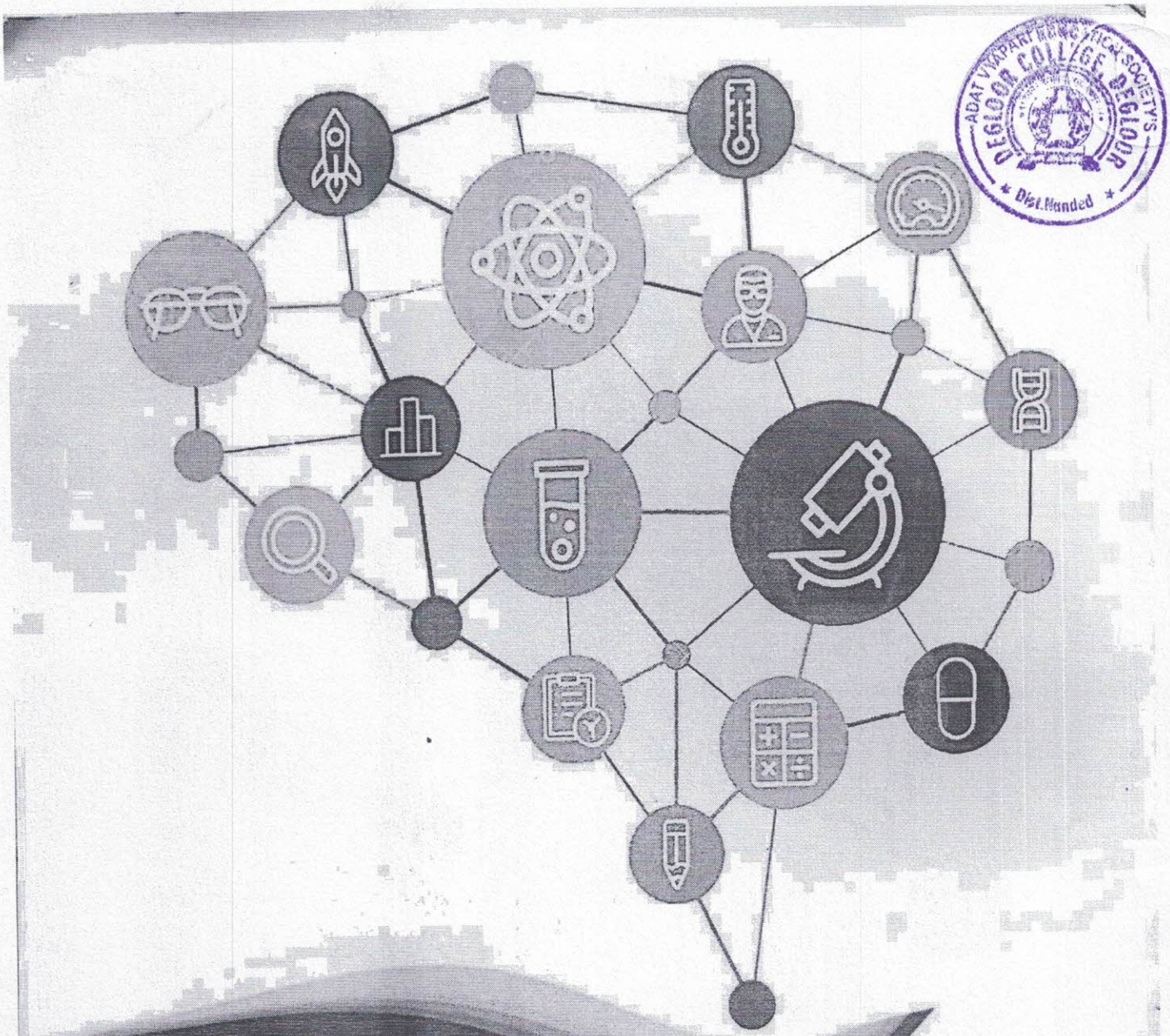

ADAT VYAPARI SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA
ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta5050@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner